

र्वास्त्रिरावर्ते वे वि.वी.वि.वी.बुं स्वाप्तराद्ध्यार्या व्याप्तराद्ध्यार्या व्याप्तराद्ध्यार्या विषा

Tibetan Women Authors Series

TSERING AND HER YAK GO TO THE LIBRARY (II)

(In Tibetan and English)

By Kalsang Yangzom Translated by Nangsal Tenzin Norbu Illustrated by Tenzin Tendhar Book design by Tsering Nangyal

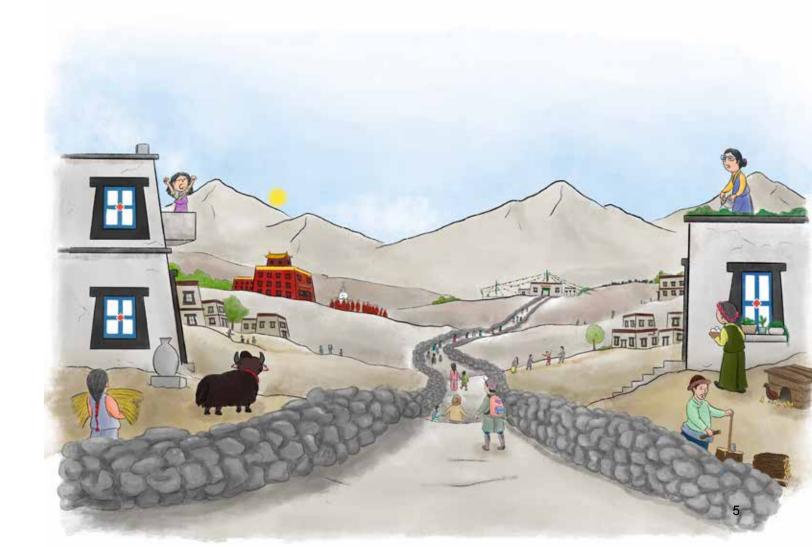
Text ©2024 by Kalsang Yangzom Illustrations ©2024 by Tenzin Tendhar All rights reserved.



વાળાસ્ટ્રાહાળાસ્ટ્રાણ ઉપાયે કાર્યાણાયાસ્ટ્રાણ

क्रें त्रिम् क्रियान्य स्वाध्य स्वाध्

तुः ॲं के देर में में र मुश्रेय वा व्यं प्रदार प्रदे प्रदे से से हैं प्रदार देश की र यः "तृः सः विवित्रः वावि "बेसः ग्रीः व्यान्यः । वारः वेदः दिने वार्षेत्रः वादः वहेंत्र विगाणित पान्य मुर्जे के सेट मी विया यके मानिया ग्राट सेना यग्रायात्रयात्रात्र्ये सहित्। मान्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्याया र्बे के नेराया पळवाया पदी पावरा पी पेरिया नेरा



तुः र्र्यः कें स्टा वीश्वास्त्रः स्था विद्या स्था विद्या कें स्था कें स्था

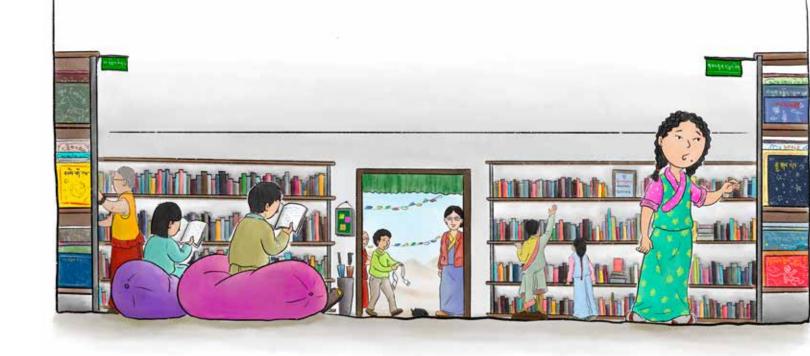
भ्रान्यरम् भ्रूर्यावयाय्याः द्वार्याः व्याप्तायः व्यापत्तायः व्यापत्तयः व्यापत्त्यः व्यापत्यः व्यापत्त्यः व्यापत्यः व्या

च्यामः सेन्। च्यामः सेन्।



श्चिर्यावर्यायाळ्याच्ये हेराया श्वराश्चात्र्वर्यायाया तुः शें कें देर वी या ग्रार थे नया ग्री यत्त्र तु र पेंद प्रदे द रे भें अप ग्री अर यः श्रुः इयः ५८। व्यवः रेग श्रुरः नेग हैशः रेगायः श्रेंगशः प्रेः ५ रोः नेन वर्षेत्र श्रु र्कें ग्रां भी गार्श्वे गार्ग भी सार्वे सार्वे सार्थे मार्थे ग्राटार्ट्स सुर्द्र देन विन न सुनाय ग्री सुर दिना स्व साम सुरस्त र किंट सेंश निर्मे में नामिट ने दे नार्विन संभी ना नी सदे सुट नु दर्भेय नान्त केंद्र'र्स्' विश्वराजवना स्प्रिंद्र' संदूष्ण में मूर्या संस्थित स्वराद्ये देव ने म्रम्भाया भ्रः र्रोजा होन कुः वर्गे रहुंग्रमः वेदाया प्रदास विद्या स्वरं कें दिर वीया वाध्या वाध्य त्या क्षा उसा हुया व्यया सेराळ दारेवा श्रेः क्षंत्रः वेद्विष्ठा अद्येष्ठित्। द्वेद्वेत् इस्र अस्य स्वत् क्षेत्रः व्या तुः श्रें क्टें सेर सर हेर त्या दर्वी श्रासदे से या दे राम मा हेर विवा से त्युवा

विश्वास्त्री क्षेत्रः भुन्ति स्थान्त्र । क्षेत्रः भुन्ति । कष्ति । कष्ति



ॷ_{ऄॱऄॖ}ॱॸॖॻॖॸॺॱढ़ॺॱॺॻऻॺॱॻॖऀॺॱॸॖॱक़ॕॱॸऀॸॱॺॱ"ॸॺ॓ॱॺॾॕॸॱ पिट देवे वट वी देश देश इस अर्डें अप अर्थें देश के और वी गा पिवे वी रेअः सूरः नव्याः धॅरः रेट्या "डेअः याश्रुट्या देः त्र्यः सुरः यश्रुट्यः यर "ने पर्य र्शेट रहर वि. यु. शेर रह वि. यावस न्युन रेया परे रे केंट्रिय खेर न्भेनेनवर्क्षया ग्रेप्पेन्या असेन्यूया "वेयान्ना न्याने स् क्रिया यार्से यद्राया केंया वर्षे स्वया ने साम विवा वीया ने या न <८:क्रॅंदे:८ग्'ळेग्रायायायी'ग्रीयायदेख्याक्रॅंद्रायवा'नेव:>ठेया याविषाः अम्बाकाः कें होन् श्चिम् खेन्। नेन ने प्यत्ये मेषाका सुः श्चिम् सम गैर्भार्स्मिन वर्दे दिल्ली दिल्ली है । विश्व के स्वार्थ के स्वर्ध के स्वार्थ रेट'ल'भूट'क'रेश'ग्वट'न'रेट्रा

तुःश्रॅंकें नेटाविस्रशः ग्रेंकें स्वेटाकेवार्यसः विस्ति मुद्देश मुद्देश मुद्देश स्वेदा के स्वेदा स्व



तुः र्रें कें सेट जीया "यायाय प्रिंत् र्या ह्या स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वय

"तुः र्र्यः स्टायः सर्ग्रेज्ञाश्चार्यः हेन्द्रः वित्रः वि





"न्धे अर्हेन् विन्वी नेन वायर श्रेवा विन्ते वा नुस्य सूर रेन्। न्द्रभा हिन्न्द्रभी साम्याप्य निर्वे निर्वे निर्वे सम्याप्त निर्वे । ख्वे देट र् र्रह्मिस र रहें वा स र्टा वाय शेर सुर सुर वा पर वर्देन खेन वा धर वश्चर हेव ग्रम् भारत्व हर हैं वा गी रेना क्रेंग भारत र्ये निव्यत्यार्के या पराद्ये में निर्मा में मित्र राष्ट्र केत्र निर्मा नेन इसमान्यां कि निमान के स्वाप्त के निमान के नि गहेशम। गयाश्चिन होन स्टायान्ये में मानी वर्षेन सार्थिन वा रमे नेन महस्य महास्य दंश विवा र्या विवा रहे वा विवा में ने न वाश्रुसाय। हिन्नम् वीसान्धे नेवालान्वासान्यम् वाश्रुसाय। गठेरा होत द्वीरा में। द्वे देव हो हैव हो हैव है वा हु या द्वीर वीरा हो विश्व हो । श्रेक्तायान्य विवास्त्रे इस्रयायास्त्रेय हेवा क्वा विवासी सारेट "हेस गशुरुषायः रेत्।

तुःर्शे के नेट वीश "द क्षेत्रे कर ट या देव वाषर वदे वकर वावे र्धरामी धेवा "वेशान निष्ठा विराधेश रहे। सहिरामरामी क्षेर्र रहे हैं। वेविषायायान्युवाव्यान्यून्येन्यवे विद्रावि ने ख्रमाने। माधमाने त्यामिं से सिंह से सिंह स्थान साम से सिंमा होना वर्षे न प्रमान न्मे अहें न प्रमानि अस्य श्री मा स्थानि न स्थानि न स्थानि न स्थानि । न स्थानि स वर्षानुः वें कें नेदः वीर्षाद्वें सहित्। वदः वी श्रुष्ठाः भुः नुवृद्द्रशः उवः वयार्षः यायमान्याम्यम् नियाये स्वत्रम् ग्याया "रे न्या "र्विट से त्या द्या स्वित्त स्वा त्या स्वा न्या स्वा न्या स्वा न्या स्वा न्या स्वा न्या स्वा न क्रें पळंबर्या पर्दे हुराय मेर्



द्यः त्रेष्यः व्याप्तक्ष्यः व्याप्तक्षयः व्याप्तः व्यापतः व्याप्तः व्यापतः व

विट्राचित्र ने स्थान विद्यात व



Tsering And Her Yak Go To The Library

By Kalsang Yangzom Illustrated by Tenzin Tendhar



The library in Tsering's village was called the Tara Kosh and it was opening a new children's reading centre tomorrow. Ms. Yangchen was the head librarian and Tsering's neighbour. She often saw Ms. Yangchen leave for the library as she herself left for school and Ms. Yangchen would always stop and talk to her.

Tsering and her yak Reva, woke up extra early to get ready for the opening. There were going to be lamas from the monastery who would bless the centre and anis from the nunnery were going to recite Dolma Praises to the 21 Tara. Tsering and her mother were also participating in the gorshay to commemorate the opening.

Tsering wore an emerald coloured chuba with golden lotus pattern on it and she made sure to braid yellow ribbons on Reva's fur so that they would match.

The library's courtyard was decorated with brightly coloured lungta and was filled with a festive air. The lamas began the sang and everyone offered sprigs of juniper, tsampa, and incense. The fragrance from the sang relaxed Tsering and she tried her best to recite the 21 Tara with the anis. Soon the gorshay began and she followed along with her mother as they danced in a circle.





After the gorshay were over, Ms. Yangchen opened the centre's doors and welcomed everyone in. Tsering saw bookshelves along the walls, each dedicated to various topics like art, science, storybooks, maths etc. There were colourful posters of books and maps of various countries. She also saw a reading corner that had large cushions on the floow, a few people were already making themselves comfortable there. After looking around, Tsering quickly went to the science section. There are so many books, she thought excitedly but she didn't know how to find what she wanted. She approached Ms. Yangchen for help.

"The books here are arranged alphabetically, based on the author's last name." Ms Yangchen said. "So, let's see, you are looking for books on astronomy? I remember ordering a book called A Children's Guide to Our Galaxy by Pema Chonzom. Is that something you would be interested in?" she asked.

"Yes!" exclaimed Tsering, "I am doing a class presentation on our Solar System so it will be helpful."

"How wonderful. So the last name of the author is Chonzom, therefore we will look at the row with the label C. Do you want to help me look for it?" asked Ms Yangchen.

"Yes, I want to help." Tsering said as she looked intently at the books in the row and halfway across, she found the book and presented it to Ms Yangchen.







"That was quick. Now let's get to the next part. You will need to make a library card and I will issue the book to you so that you can take it home."

They walked together to the counter where Ms. Yangchen gave Tsering her first library card. Tsering wrote her name on it and Ms. Yangchen signed next to it. As she scanned the book, Ms. Yangchen said, "Here are the rules for borrowing books. First, you have the book for 15 days and you can renew it for 7 more days if you want. You must return the book on time so that others can get the chance to read it too. Second, you can take up to 3 books at a time if you want. Third, you need to respect the books and be careful when handling them. This also means no writing on it or folding the pages. Any questions?" Ms. Yangchen smiled as she asked.

"Not yet but I will come back to get more books soon." Tsering said. She was looking forward to reading the book and sharing her library experience with Reva, who was waiting outside in the courtyard. She waved goodbye to Ms. Yangchen and walked out where Reva greeted her with a gentle nudge.

"The library is like a treasure trove where you need to search for what you want," Tsering explained to Reva "you can find books on everything in a library and I can't wait go back and explore."

As they walked home, Tsering was already looking forward to her next visit to the library.



